हिंदी के विकास में स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान

शांति सुमन दीपांकर
शोधार्थी
इंदिरा गाँधी जनजातीय केंद्रीय,विश्वविद्यालय,अमरकंटक
अनुपपुर (म.प्र.)

डॉ. पूनम पाण्डेय
शोध निर्देशिका
इंदिरा गाँधी जनजातीय केंद्रीय,विश्वविद्यालय,अमरकंटक
अनुपपुर (म.प्र.)

शोध सार :- ***यह तथ्य सर्वथा सत्य एवं सर्वमान्य है कि मुंशी प्रेमचंद, , महावीर प्रसाद द्विवेदी , भारतेंद हरिश्चंद्र, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर आदि अनेक हिंदी साहित्यकारों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया। इन सबकी रचनाओं ने राष्ट्रीयता के विकास में अति महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिंदी साहित्यकारों की रचनाओं ने उदासीन लोगों को जगाने और क्रूर अंग्रेज तानाशाही के विरुद्ध उठ खड़े होने का सफल आह्वान किया। हिन्दी साहित्यकारों की न जाने कितनी रचनाओं पर अंग्रेजों ने रोक लगाई और न जाने कितना साहित्य जलाने की कोशिश की लेकिन उनकी लेखनी सदा एक सच्चे क्रांतिकारी की भांति स्वतंत्रता आंदोलन में विस्फोटक का कार्य करती रही हैं। हिंदी साहित्यकारों की लेखनी के इसी जज्बों ने आजादी को प्राप्त करने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया ।***

बीज शब्द :- राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, उत्कृष्ट साहित्य, हिंदी कवियों, आन्दोलन, शताब्दियाँ, स्वतंत्रता–संग्राम, मनीषियों आदि।

आज हमारे देश में 14 सितंबर 'हिंदी दिवस' के रुप में मनाया जाता है तथा यह क्यों मनाया जाता है, यह सर्वविदित है। वर्तमान समय में हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा ही नहीं राजभाषा भी है। हिंदी को एक प्रादेशिक भाषा की हैसियत से लेकर राष्ट्रभाषा के रुप में लोकप्रिय और सर्वमान्य बनने में और उसके पश्चात भारत की राजभाषा बनने में कई शताब्दियां लगी हैं । राजभाषा के रूप में हिंदी को जो मान्यता दी गयी उसमें स्वतंत्रता-संग्राम के हमारे राजनेताओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि हिन्दी के विकास के लिए उन चिन्तकों, मनीषियों और नेताओं ने अभूतपूर्व कार्य किया है जो अधिकतर हिंदीत्तर प्रदेश के थे। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार सर्वप्रथम बंगाल में उदित हुआ और राष्ट्रभाषा बनने के प्रारम्भ से अन्त तक इसे वहां के मूर्धन्य नेताओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। संपूर्ण देश के लिए राष्ट्रभाषा हिंदी की कल्पना करने वालों में सबसे अग्रणी बंगाल के श्री केशवचंद्र सेन है । उन्होंने 1873 में अपने पत्र 'सुलभ समाचार' (बंगला) में लिखा "यदि भाषा एक न होने पर भारतवर्ष में एकता न हो तो उसका उपाय क्या है? समस्त भारतवर्ष में एक भाषा का प्रयोग करना इसका उपाय है। इस समय भारत में जितनी भी भाषाएं प्रचलित हैं, उनमें हिंदी भाषा प्राय: सर्वत्र प्रचलित है. इस हिंदी भाषा को यदि भारतवर्ष की एक मात्र भाषा बनाया जाए तो अनायास ही (यह एकता) शीघ्र ही सम्पन्न हो सकती है।" इनके अलावा अन्य अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने प्रान्तीयता की भावना से ऊपर उठकर मुक्त कंठ से हिंदी का समर्थन किया, जिनकी हिन्दी सेवा अविस्मरणीय रहेगी।

"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, जिसे मैं प्राप्त करके रहूंगा" का नारा देने वाले नेता बाल गंगाधर तिलक का स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में विशिष्ट स्थान है। भाषा के बारे में तिलक का विचार था कि हिंदी ही एक मात्र भाषा है जो राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिंदी का समर्थन करते हुए 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में उन्होंने लिखा था "यह आंदोलन उत्तर भारत में केवल एक सर्वमान्य लिपि के प्रचार के लिए नहीं है, यह तो उस आन्दोलन का एक अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आन्दोलन कहूंगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारत वर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है, क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है, अतएव अदि आप किसी राष्ट्र के लोगों को एक दूसरे के निकट लाना चाहें तो सबके लिए समान भाषा के बढ़कर सशक्त अन्य कोई बल नहीं है।" तिलक हिंदी को राष्ट्रभाषा मानते थे तथा देवनागरी को हिंदी की लिपि मानते थे । उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को प्रबल करने के लिए सन् 1903 में 'हिंदी केसरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारंभ किया और इस बात का परिचय दिया। उसके साथ ही तिलक ने अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी में भाषण देने की परम्परा आरंभ करके अन्य सभी लोगों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया।

महात्मा गांधी भाषा के प्रश्न को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रश्नों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंनें प्रारंभ से हिंदी को स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बनाने के लिए अथक परिश्रम किया। उनका अनुभव था कि "पराधीनता चाहे राजनीतिक क्षेत्र की हो अथवा भाषाई क्षेत्र की, दोनों ही एक दूसरे की पूरक और पीढ़ी-दर-पीढ़ी सदा परमुखापेक्षी बनाये रखने वाली हैं।" सन् 1917 में उन्होंने एक परिपत्र निकाल कर हिंदी सीखने के कार्य का सूत्रपात किया। गांधी जी की प्रेरणा से 1925 में काँग्रेस ने यह प्रस्ताव पास किया कि कांग्रेस का, काँग्रेस की महासमिति का और कार्यकारिणी समिति का कार्य अधिकाश रूप से हिन्दुस्तानी में ही चलाया जायेगा। इसी का परिणाम था कि सन् 1925 में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन भरतपुर में हुआ जिसकी अध्यक्षता गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की और उन्होंने हिंदी में बोलकर हिंदी का प्रबल समर्थन किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विभिन्न राज्यों में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए न केवल नेताओं को प्रेरित किया अपितु लोगों के अलग-अलग जत्थो को विभिन्न राज्यों में भेजा। उन्होंने स्वयं अपने बेटे श्री देवदास गांधी को हिंदी-प्रचार के लिए भारत के दक्षिण में भेजा था। आज़ादी के आन्दोलन में इसे पुनीत कर्तव्य मानकर विभिन्न राज्यों में विभिन्न हिंदी -प्रचारक गए और वहाँ उन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। राष्ट्रीय चेतना से युक्त हमारे ये हिंदी-प्रचारक आज़ादी में तथा आज़ादी के बाद भी लोगों को जाग्रत करते हुए उनके बीच हिंदी का प्रचार-प्रसार करते रहे ।

राष्ट्रपिता गांधी जी के प्रयासों से तमिलनाडु में हिंदी के प्रति ऐसा उत्साह प्रवाहित हुआ कि उस प्रांत के सभी प्रभावशाली नेता हिंदी का समर्थन करने लगे। यह वह समय था जब चक्रवर्ती राज गोपालाचारी जैसे नेता हिंदी के प्रचार को अपना भरपूर सहयोग दे रहे थे। 'पंजाब केसरी' के नाम से प्रसिद्ध लाला लाजपत राय एक महान देशभक्त शिक्षाशास्त्री ही नहीं, एक प्रभावशाली पत्रकार भी थे। पंजाब में हिंदी के प्रचार का पूरा श्रेय लाला जी को जाता है । जब उर्दू -हिंदी का विवाद जोरों से चल रहा था, तब लाला जी ने हिंदी का इतना समर्थन किया की पंजाब के शिक्षा क्षेत्र में हिंदी को महत्वपूर्ण स्थान मिला। उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की तथा उनमे हिंदी का अध्ययन अनिवार्य बनाया गया । लालाजी की प्रेरणा से ही पंजाब विश्वविद्यालय के पाठयक्रम में हिंदी को स्थान मिला। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पुरूष के रूप में विख्यात पंडित मदनमोहन मालवीय जी का

नाम हिंदी प्रचारकों में बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। वे न केवल एक महान हिंदीव्रती थे अपितु हिंदी आंदोलन के अग्रणी नेता भी थे। हिंदी के प्रचार - प्रसार और स्वरूप निर्धारण दोनों ही दृष्टियों से उन्होंने हिंदी की अभूतपूर्व सेवा की। उन्हीं के प्रोत्साहन, समर्थन और प्रेरणा के फलस्वरूप हिंदी प्रशासन एवं राजकाज की भाषा बनी।'हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान' की सेवा उनका संकल्प था। उनके सार्वजनिक जीवन की सक्रियता, उनके विशिष्ट आदर्श और योजनाएँ इसी संकल्प से प्रेरित थी। मालवीयजी जीवन-पर्यन्त भारतीय स्वराज्य के लिए कठोर तप करते रहे। अपितु हिंदी की प्रतिष्ठापना के लिए अनवरत साधना में लीन रहे। सन् 1886 के काँग्रेस अधिवेशन में श्री मालवीय के भाषण से प्रभावित होकर कालाकांकर के राजा ने अपने हिंदी दैनिक 'हिन्दुस्तान' का उन्हें संपादक बनाया। उसके बाद उन्होंने हिंदी साप्ताहिक 'अभ्युदय' प्रारंभ किया और 1910 में प्रयाग से 'मर्यादा' नामक हिंदी पत्रिका तथा सन् 1933 से 'सनातन धर्म' नामक हिंदी पत्र प्रारंभ किया। उन्हीं की प्रेरणा से कई और हिंदी पत्रिकाओं का जन्म हुआ।

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की हिंदी सेवा भी अप्रतिम है। वे हिंदी साहित्य सम्मेलन के कर्ता-धर्ता थे और उनसे हिंदी प्रचार के कार्य को प्रबल गति मिली। टण्डन जी ने अपना सारा जीवन हिंदी की सेवा और हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि में अर्पित किया। हिंदी को आगे बढ़ाने और राष्ट्रभाषा के रूप में इसे सर्वोत्तम स्थान देने के लिए टण्डन जी ने कठिन परिश्रम किया। उन्होंने 10 अक्टूबर 1910 को वाराणसी के नागरी प्रचारिणी सभा के प्रांगण में हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की। इसके पश्चात 1918 में उन्होंने 'हिंदी विद्यापीठ'और 1947 में 'हिंदी रक्षक दल'की स्थापना की। टण्डन जी हिंदी को देश की आज़ादी के पहले आज़ादी प्राप्त कराने का'और आज़ादी के बाद 'आज़ादी को बनाये रखने का'साधन मानते थे। उन्होंने हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने के लिए हर संभव प्रयास किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने बहुत ही आकर्षक ढंग से हिंदी भाषा के महत्व को बताया ताकि सबके मन में हिंदी भाषा के लिए प्रेम जाग जाए और देशभर में हिंदी का ही प्रचार-प्रसार हो। उन्होंने बहुत ही सरल ढंग से हिंदी को प्रगति के मार्ग पर लाने का प्रयास किया। टंडन जी के अतिरिक्त राष्ट्रीय नेताओं में देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी की हिंदी सेवा से कौन परिचित नहीं है। भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष के रुप में हिंदी को उचित स्थान दिलाने का श्रेय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को ही है। उन्होंने ही भारतीय संविधान की भारतीय भाषाओं में परिभाषिक कोष तैयार करवाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति के पद से उन्होंने जो हिंदी की सेवा की उसका विशेष महत्व है। उनके कार्यकाल में सरकारी स्तर पर हिंदी को मान्यता मिली।

"यदि भारत में प्रजा का राज चलाना है, तो वह जनता की भाषा में चलाना होगा" इन शब्दों में जनता की भाषा की वकालत करने वाले काका कालेलकर जी का नाम हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और विकास में अतुलनीय योगदान देने वालों में आदर के साथ लिया जाता है। दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार के वे कर्णधार रहे और गुजरात में रहकर उन्होंने हिंदी प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाया। सन-1942 में वर्धा में जब हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना हुई तो काका साहब ने 'हिन्दुस्तानी' के प्रचार के लिए पूरे देश का भ्रमण किया। उन्होंने हिंदी के प्रचार कार्यक्रम को राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में प्रतिष्ठित किया और सन् 1938 में दक्षिण भारत के हिंदी प्रचार सभा के अधिवेशन में इसका खुलकर उद्घोष किया। इसी लक्ष्य पर अडिग रहते हुए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास में लगा दिया। श्री केशव चन्द्र सेन पहले ऐसे राष्ट्रीय नेता थे जिन्होने 'राष्ट्रभाषा हिंदी' के महत्व को हृदय से समझा और स्वीकार किया। साथ ही, भारत को एकता के सूत्र में बांधने की दृष्टि से सभी से यह आह्वान किया कि सब हिंदी को आत्मसात करें क्योंकि हिंदी हमारे देश की आत्मा है। उन्होने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हर संभव प्रयास किया। उनका मानना था कि हमारा प्राथमिक उद्देश्य है अपनी बात को आखिरी व्यक्ति तक पहुँचाना और इस देश में आखिरी व्यक्ति तक संदेश पहुँचाने का सरलतम मार्ग है हिंदी। केशव जी का मत था कि हिंदी के माध्यम से हम किसी व्यक्ति के ही नहीं अपितु उसकी आत्मा तक को स्पर्श करने की क्षमता रखते हैं क्योंकि हिंदी भारत के जनसामान्य की आत्मा में बसती है।

राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रहरी के रुप में सम्मानित सेठ गोविन्द दास जी को कौन भुला सकता है। उन्होंने अपने पूरे युवाकाल में कई हिंदी पत्रिकाएं प्रारम्भ कर हिंदी के प्रति अपने प्रेम का परिचय दिया था। 18 मई सन्1949 में जब भारतीय संविधान सभा की बहस चल रही थी तब गोविंद दास जी ने कहा था – "मैं व्यक्तिगत रूप से यह चाहता हूँ कि – संविधान मौलिक रूप में हमारी मुख्य भाषा में हो, अंग्रेजी में नहीं; जिससे हमारे भावी न्यायाधीश अपनी भाषा पर निर्भर हो सकें, विदेशी भाषा पर नहीं।" भारतीय लोकसभा के सदस्य के रुप में उन्होंने हिंदी के प्रसार के लिए कई कदम उठाये जो हिंदी को राजभाषा का स्थान दिलाने में सहायक सिद्ध हुए, उन्होने हिंदी की समृद्धि और प्रचार के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसी कारण से 1963 में सेठ जी को अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया था।

निष्कर्ष :-

संक्षेप में हमारा निष्कर्ष है कि हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उसे राजभाषा की मंजिल तक पहुंचाने में स्वतंत्रता सेनानी राष्ट्रीय नेताओं के महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके अतिरिक्त भी अन्य बहुत से महत्वपूर्ण नेताओं के नाम गिनाये जा सकते हैं, जिन्होंने हिंदी का प्रबल समर्थन किया और हिंदी को विकसित करने में अपना बहुमूल्य सहयोग दिया।

****

सन्दर्भ -:

1. हिन्द स्वराज – महात्मा गाँधी (प्रभात प्रकाशन ४/११ आसफ अली रोड – नई दिल्ली ११०००२
2. गोरा – रविन्द्रनाथ टैगोर – रूपा प्रकाशन एंड कंपनी
3. न्यू लेप्स फॉर ओल्ड-अरविन्द घोष (१८९३ दैनिक समाचार पत्र 'इंदु प्रकाश' में लिखा गया था।
4. हिंद स्वराज – महात्मा गांधी
5. वन्देमातरम – अरविन्द घोष
6. भारत एक खोज – जवाहर लाल नेहरू